



बूढ़ी काकी का साहित्यिक विश्लेषण

*¹किरण दांगोड़े और ²श्रद्धा पटेल

*^{1,2}सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोरावाँ, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

यह मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित एक मार्मिक कहानी है, जो समाज में वृद्धों के प्रति उपेक्षा और स्वार्थ के व्यवहार को दर्शाती है, जहाँ अपनी जायदाद देने के बाद एक असहाय वृद्ध महिला को परिवार द्वारा भूखा और तिरस्कृत किया जाता है, लेकिन अंत में करुणा और मानवीय संवेदना के माध्यम से सुधार दिखाया जाता है।

'बूढ़ी काकी' केवल एक कहानी नहीं, बल्कि एक मार्मिक चित्रण है कि कैसे समय के साथ रिश्तों में स्वार्थ और निष्ठुरता आ जाती है। बूढ़ी काकी ने अपनी संपत्ति भतीजे को दे दी, यह सोचकर कि वे जीवनभर उनकी सेवा करेंगे, लेकिन उनका भतीजा और उसकी पत्नी बूढ़ी काकी को घर का बोझ मानने लगते हैं। कहानी दिखाती है कि कैसे समाज में बुजुर्गों की देखभाल की जिम्मेदारी निभाने के बजाय उन्हें अकेला और उपेक्षित कर दिया जाता है, और प्रेमचंद इसी यथार्थ को अपनी लेखनी से उजागर करते हैं, जिससे पाठक भावनात्मक रूप से जुड़कर सोचने पर मजबूर हो जाते हैं। बूढ़ी काकी प्रेमचंद की लिखी गई यह कहानी 'बूढ़ी काकी' मानवीय करुणा की भावना से ओतप्रोत कहानी है 'बूढ़ी काकी' कहानी में बूढ़ी काकी एक असहाय, वृद्ध महिला हैं, जो अपनी सारी संपत्ति भतीजे को देने के बाद उपेक्षा और तिरस्कार का शिकार होती हैं; वे भूख और लालसा से पीड़ित रहती हैं, लेकिन उनकी संवेदनशीलता और करुणा, परिवार (विशेषकर भतीजे की पत्नी रूपा) के हृदय परिवर्तन का कारण बनती है, जिससे उन्हें अंततः सम्मान और प्रेम मिलता है; वह बुढ़ापे की लाचारी और रिश्तों में स्वार्थ का मार्मिक प्रतीक है।

मुख्य शब्द: उपेक्षा, वृद्धावस्था, मानवीय करुणा, तिरस्कार, अपमान, लज्जित करना, भूख की तड़पना, स्वार्थ की भावना, परिवार में नैतिक शिक्षा का हास, लालच।

प्रस्तावना

अवस्था और लाचारी: वह एक बूढ़ी और असहाय स्त्री हैं, जिनके शरीर की इंद्रियाँ (आँख, हाथ, पैर) जवाब दे चुकी हैं और उनका एकमात्र सहारा उनकी जिह्वा (स्वाद) है, जिसे वे बुढ़ापे में नियंत्रित नहीं कर पातीं।

- **आर्थिक स्थिति:** उन्होंने अपनी सारी जायदाद भतीजे बुद्धिराम को दे दी, इस वादे पर कि वह जीवनभर उनकी सेवा करेगा, लेकिन बदले में उन्हें केवल उपेक्षा मिलती है।
- **भावनात्मक स्थिति:** वह अपनी भूख और अकेलेपन से तड़पती रहती हैं, खासकर जब घर में उत्सव होता है और उन्हें खाने को नहीं मिलता, जिससे वह बहुत दुखी और क्रोधित होती हैं।
- **मुख्य संघर्ष:** उनका जीवन अपने भतीजे और उसकी पत्नी रूपा के स्वार्थी व्यवहार के कारण संघर्षपूर्ण हो जाता है, जहाँ उन्हें भोजन के लिए भी तरसना पड़ता है।
- **कहानी में भूमिका:** कहानी के अंत में, जब भतीजे की पत्नी लाडली (रूपा) उनकी दुर्दशा देखती है, तो उसमें करुणा जागती है और वह अपनी गलती मानकर काकी को प्रेम और सम्मान से भोजन कराती है, जिससे काकी की आत्मा को शांति

मिलती है।

संक्षेप में, बूढ़ी काकी बुढ़ापे की लाचारी, परिवार के स्वार्थ और मानवीय संवेदना के पुनर्जन्म का एक मार्मिक चित्रण है, जिन्हें प्रेमचंद ने समाज की कड़वी सच्चाई दिखाने के लिए प्रस्तुत किया है। सामाजिक मुद्दे को उजागर करना: कहानी के माध्यम से समाज में वृद्धों, विशेषकर वृद्ध महिलाओं के प्रति होने वाले उपेक्षापूर्ण व्यवहार और उनके अकेलेपन की समस्या को सामने लाना।

मानवीय संवेदना जगाना: बालकों (जैसे लखना) और परिवार के अन्य सदस्यों के माध्यम से यह दिखाना कि कैसे वृद्धों के प्रति दया और सहानुभूति ज़रूरी है, और मातृ-वियोग की पीड़ा कितनी गहरी होती है।

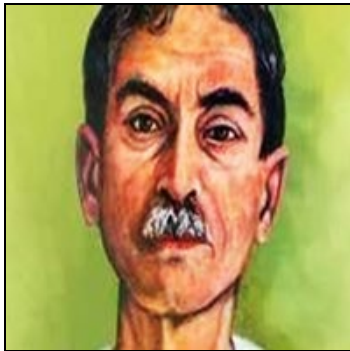
नैतिक मूल्यों का संदेश: यह बताना कि परिवार में बुजुर्गों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, और कैसे भौतिक सुख-सुविधाएँ भावनात्मक सहारे का विकल्प नहीं हो सकतीं।

चरित्र चित्रण का विश्लेषण: बूढ़ी काकी, पंडित बुद्धिराम और अन्य पात्रों के व्यवहार और भावनाओं का मनोवैज्ञानिक व सामाजिक विश्लेषण करना।

'बूढ़ी काकी' कहानी के संदर्भ में शोध के उद्देश्य (Objective of Research in Context of 'Budhi Kaki' Story):

- सामाजिक मुद्दे को उजागर करना:** कहानी के माध्यम से समाज में वृद्धों, विशेषकर वृद्ध महिलाओं के प्रति होने वाले उपेक्षापूर्ण व्यवहार और उनके अकेलेपन की समस्या को सामने लाना।
- मानवीय संवेदना जगाना:** बालकों (जैसे लखना) और परिवार के अन्य सदस्यों के माध्यम से यह दिखाना कि कैसे वृद्धों के प्रति दया और सहानुभूति ज़रूरी है, और मातृ-वियोग की पीड़ा कितनी गहरी होती है।
- नैतिक मूल्यों का संदेश:** यह बताना कि परिवार में बुजुर्गों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, और कैसे भौतिक सुख-सुविधाएँ भावनात्मक सहारे का विकल्प नहीं हो सकती।
- चरित्र चित्रण का विश्लेषण:** बूढ़ी काकी, पंडित बुद्धिराम और अन्य पात्रों के व्यवहार और भावनाओं का मनोवैज्ञानिक व सामाजिक विश्लेषण करना।

जीवन परिचय (Biography):



मुंशी प्रेमचंद (धनपत राय श्रीवास्तव) हिंदी के महान लेखक थे, जिनका जन्म 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी के लमही गाँव में हुआ था; गरीबी और अभावों से भरे जीवन के बावजूद, उन्होंने 'गोदान', 'गबन', 'निर्मला' जैसे कालजयी उपन्यास और 'ईदगाह', 'पूस की रात' जैसी कहानियाँ लिखीं, जिन्होंने ग्रामीण जीवन, सामाजिक बुराइयों और आम आदमी के संघर्षों को यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया और उन्हें 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि दिलाई, और 8 अक्टूबर, 1936 को उनका निधन हो गया।

- जन्म और बचपन:** धनपत राय श्रीवास्तव का जन्म 31 जुलाई, 1880 को लमही, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उनके पिता, अजायब राय, डाकखाने में मामूली नौकरी करते थे। बचपन अभावों और संघर्षों से भरा था और आठ साल की उम्र में माँ का देहांत हो गया।
- शिक्षा और संघर्ष:** गरीबी के कारण उन्हें नंगे पैर स्कूल जाना पड़ता था। मैट्रिक तक की शिक्षापूरी की और फिर वकील बनने का सपना अधूरा रह गया, क्योंकि गरीबी ने उन्हें मजबूर कर दिया। उन्होंने ट्यूशन करके स्नातक की डिग्री हासिल की।
- लेखन की शुरुआत:** कम उम्र में ही उर्दू और अंग्रेजी उपन्यासों को पढ़ने का शौक था। 13 साल की उम्र से लिखना शुरू किया और उर्दू में 'नवाब राय' नाम से लिखते थे। बाद में 'प्रेमचंद' नाम से प्रसिद्ध हुए।
- आर्थिक स्थिति और नौकरी:** असहयोग आंदोलन के दौरान सरकारी नौकरी छोड़ दी और पूरी तरह साहित्य को समर्पित हो गए। 'हंस' और 'जागरण' जैसी पत्रिकाएँ निकालीं।
- निधन:** 8 अक्टूबर, 1936 को उनका निधन हो गया।

कुछ प्रमुख कहानियाँ और उनके विषय:

'पूस की रात'	'पंच परमेश्वर'	'ईदगाह'	'कफन'	'दो बैलों की कथा'
'बड़े घर की बेटी'	'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न'	'बूढ़ी काकी'	'नमक का दारोगा'	

- 'पूस की रात':** एक गरीब किसान हल्कू की कड़ाके की ठंड और उसकी गरीबी की मार्मिक कहानी।
- 'कफन':** सामाजिक-आर्थिक अन्याय और कर्मकांडों पर एक तीखा व्यंग्य, जिसमें बाप-बेटे की बेबसी दर्शाई गई है।
- 'ईदगाह':** ईद के अवसर पर एक अनाथ बालक हामिद की मानवीय संवेदना और त्याग की कहानी।
- 'पंच परमेश्वर':** दोस्ती और न्याय के बीच के संघर्ष को दर्शाती कहानी, जहाँ न्याय सर्वोपरि है।
- 'बड़े घर की बेटी':** जमींदारी परिवार में बहू के रिश्तों और सामंजस्य का चित्रण।
- 'दो बैलों की कथा':** दो स्वाभिमानी बैलों, हीरा और मोती, के माध्यम से स्वतंत्रता और मानवीय भावनाओं का वर्णन।
- 'नमक का दारोगा':** ईमानदारी और भ्रष्टाचार के बीच की लड़ाई, जिसमें सत्य की विजय होती है।
- 'बूढ़ी काकी':** वृद्धों की उपेक्षा और पारिवारिक संवेदनहीनता की मार्मिक कथा।
- 'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न':** प्रेमचंद की पहली कहानी, जो बलिदान और प्रेम के अर्थ पर प्रकाश डालती है।

कहानी का सारांश (Summary):



- परिचय:** कहानी एक असहाय बूढ़ी काकी के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अपनी सारी संपत्ति अपने लालची भतीजे बुद्धिराम और उसकी पत्नी रूपा के नाम कर देती है, यह उम्मीद करते हुए कि वे उसकी देखभाल करेंगे।
- उपेक्षा और तिरस्कार:** समय के साथ, बुद्धिराम और रूपा बूढ़ी काकी को बोझ समझने लगते हैं। वे उन्हें स्वादिष्ट पकवानों से दूर रखते हैं और केवल रूखा-सूखा या बासी भोजन देते हैं, जिससे काकी को बहुत दुःख होता है और भूख से तड़पती हैं।
- घटना:** एक दिन घर में उत्सव होता है, जहाँ खूब पूड़ियाँ बनती हैं। रात में, भूख से व्याकुल होकर बूढ़ी काकी चुपके से रसोई में जाकर झूठे पत्तलों में बची पूड़ियों के टुकड़े खाने लगती हैं।
- पछतावा और पश्चाताप:** बहू रूपा उन्हें इस हाल में देखती है और उसे अपनी गलती का गहरा एहसास होता है। उसे अपनी निर्दयता पर बहुत पछतावा होता है और वह भगवान से माफी माँगती है।

v). **निष्कर्ष:** इस घटना के बाद बुद्धिराम और रूपा को अपनी करनी पर शर्म आती है। वे बूढ़ी काकी से माफी मांगते हैं और उनकी देखभाल करने का संकल्प लेते हैं, जिससे यह कहानी वृद्धों के प्रति सम्मान और परिवार के दायित्वों पर जोर देती है।

पात्रों का वर्णन:

- **बूढ़ी काकी (बुद्धिराम की चाची):**
 - **असहहाय और उपेक्षित:** वे वृद्ध और असहाय हैं, अपनी सारी संपत्ति भतीजे को देने के बाद उनका कोई सहारा नहीं।
 - **स्वाद के प्रति मोह:** उनकी सभी इंद्रियाँ जवाब दे चुकी हैं, और उनकी सबसे बड़ी इच्छा स्वाद (जीभ के सुख) तक सीमित है; उन्हें भोजन न मिलने पर वे रोती हैं।
 - **करुणा का पात्र:** कहानी का मार्मिक दृश्य तब आता है जब वे अंधेरे में जूठन चाट रही होती हैं, जो उनकी दयनीय स्थिति को दिखाता है।
- **रूपा (बुद्धिराम की पत्नी):**
 - **कठोर और स्वार्थी:** वह बूढ़ी काकी को बोझ समझती है और उनके प्रति क्रूर व्यवहार करती है, उन्हें भूखा रखती है।
 - **पश्चाताप और दया:** जब वह काकी को जूठन खाते देखती है, तो उसे गहरा पश्चाताप होता है, और वह अपनी गलती समझकर उनके लिए भोजन लाती है।

• रूपा की बेटी (छोटी लड़की):

संवेदनशील और करुणामयी: वह अपनी माँ की तरह कठोर नहीं, बल्कि अत्यंत संवेदनशील है। काकी की दयनीय हालत देखकर उसके मन में करुणा जागती है और वह अपनी माँ को जगाती है।

• बुद्धिराम (भतीजा):

अनैतिक और स्वार्थी: संपत्ति के लालच में उसने अपनी चाची को अपनाया, लेकिन बाद में वह और उसका परिवार काकी की उपेक्षा करने लगते हैं, हालांकि अंत में उन्हें अपनी गलती का एहसास होता है।

कथा शिल्प

'बूढ़ी काकी' कहानी की भाषा-शैली सरल, व्यावहारिक और भावपूर्ण है, जिसमें उर्दू शब्दावली का मिश्रण है और खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है; यह शैली पात्रों के मनोविज्ञान और मानवीय संवेदनाओं को गहराई से दर्शाती है, जिससे पाठक कहानी से जुड़ पाते हैं और बुजुर्गों के प्रति उपेक्षा के दर्द को महसूस कर पाते हैं। संवाद शैली अद्भुत है, जो लालच, स्वार्थ, करुणा और पश्चाताप जैसे भावों को बखूबी अभिव्यक्त करती है।

भाषा-शैली की मुख्य विशेषताएँ:

- सरलता और स्पष्टता:** प्रेमचंद की भाषा इतनी सीधी और सरल है कि हर उम्र का पाठक उसे आसानी से समझ सकता है।
- उर्दू-हिंदी का संगम:** कहानी में हिंदी और उर्दू (फ़ारसी) शब्दों का सुंदर मिश्रण है, जो तत्कालीन सामाजिक परिवेश को दर्शाता है।
- खड़ी बोली का प्रयोग:** कहानी की मूल भाषा खड़ी बोली है, जो ग्रामीण जीवन और पात्रों की वास्तविकता को सामने लाती है।
- पात्रानुकूल भाषा:** पात्रों के वर्ग (निम्न वर्ग, ग्रामीण) और उनकी स्थिति के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया गया है, जिससे वे

विश्वसनीय लगते हैं।

- भावनात्मक गहराई:** लेखक ने मानवीय भावनाओं (जैसे बुढ़ापे का दर्द, उपेक्षा, करुणा, पश्चाताप) को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक भावुक हो जाते हैं।
- संवादों की शक्ति:** कहानी के संवाद अत्यंत प्रभावी हैं, जो कृतघ्नता, स्वार्थ, और अंततः मानवीयता के जागरण को दिखाते हैं (जैसे 'फूल तो हम घर में भी सूँघ सकते हैं...')।
- बिम्ब और प्रतीक:** लेखक ने प्रतीकात्मक भाषा (जैसे तारों की थाल, संतोष सेतु) और बिम्बों (अंधेरे में खाना) का प्रयोग किया है, जो कहानी को और गहरा बनाते हैं।
- सोद्देश्य लेखन:** भाषा-शैली कहानी के उद्देश्य (वृद्धों के प्रति सम्मान) को पूरा करती है, जिससे कहानी एक सामाजिक संदेश देती है।

कुल मिलाकर, 'बूढ़ी काकी' की भाषा-शैली प्रेमचंद की लेखन कला का उत्कृष्ट उदाहरण है, जो सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं को सरल और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है।

मुख्य भाव



- वृद्धावस्था की त्रासदी:** यह कहानी दर्शाती है कि कैसे बुढ़ापा अक्सर बचपन का रूप ले लेता है, जहाँ वृद्धों को सहारे और प्रेम की ज़रूरत होती है, लेकिन परिवार उन्हें बोझ समझने लगता है।
- स्वार्थ और लालच:** प्रेमचंद ने दिखाया है कि कैसे धन-संपत्ति के लालच में लोग अपने नैतिक कर्तव्यों को भूल जाते हैं और वृद्धों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं, उन्हें तिरस्कृत करते हैं।
- मानवीय संवेदना का जागरण:** कहानी का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि अंत में, बुद्धिराम की पत्नी के माध्यम से परिवार को अपनी गलती का एहसास होता है और वे बूढ़ी काकी के प्रति दया दिखाते हैं, जिससे मानवीय भावनाओं की जीत होती है।
- समाज का आईना:** यह कहानी उस समय के समाज की ज्वलंत समस्या को उजागर करती है, जहाँ वृद्धों की उपेक्षा एक आम बात थी, और प्रेमचंद ने इसे सरल और भावनात्मक भाषा में प्रस्तुत किया है।

संक्षेप में, 'बूढ़ी काकी' एक मार्मिक कहानी है जो वृद्धों की उपेक्षा, स्वार्थ के अंधेरे और मानवीय संवेदना के पुनर्जन्म को दिखाती है, और पाठकों को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती है।

आलोचनात्मक परिदृश्य (Critical Perspective)

- **सामाजिक आलोचना:** यह कहानी समाज में बुजुर्गों के प्रति घटती संवेदनशीलता पर एक तीखा प्रहार है। यह प्रश्न उठाती है कि जिस समाज में बुजुर्गों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था, वहाँ उनकी ऐसी दुर्दशा क्यों है?
- **पारिवारिक मूल्यों का हास:** कहानी दर्शाती है कि भौतिकवाद

और स्वार्थ के चलते किस प्रकार परिवार के सदस्य अपने ही बुजुर्गों के प्रति क्रूर और असंवेदनशील हो जाते हैं।

- **नैतिक शिक्षा:** कहानी का केंद्रीय संदेश यह है कि हमें बुजुर्गों के प्रति सम्मान और करुणा का भाव रखना चाहिए।
- **मनोवैज्ञानिक विश्लेषण:** प्रेमचंद ने बुढ़ापे की उस मनोवैज्ञानिक स्थिति को बखूबी चित्रित किया है, जिसमें व्यक्ति शारीरिक रूप से कमजोर हो जाता है और भावनात्मक सहारे व भोजन के स्वाद के अलावा उसकी कोई इच्छा शेष नहीं रहती।

संक्षेप में, "बूढ़ी काकी" एक मार्मिक कहानी है जो कलात्मक उत्कृष्टता के साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों की आलोचना करती है और पाठकों को मानवीय मूल्यों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

कहानी से मिलने वाली सीख (निष्कर्ष)

- i). **बुजुर्गों का सम्मान:** हमें अपने घर के वृद्ध सदस्यों, विशेषकर बूढ़ी काकी जैसे असहाय लोगों का आदर करना चाहिए और उनकी भावनाओं का ख्याल रखना चाहिए।
- ii). **संवेदनशीलता और करुणा:** बुढ़ापा एक बीमारी की तरह होता है, जहाँ व्यक्ति कमजोर और असहाय महसूस करता है; ऐसे समय में सहानुभूति और प्रेम की सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है।
- iii). **स्वार्थ का त्याग:** कहानी दर्शाती है कि कैसे संपत्ति के लालच और स्वार्थ के कारण परिवार अपने ही बुजुर्गों को बोझ समझने लगता है, जो एक बड़ी सामाजिक बुराई है।
- iv). **आत्म-पछतावा और सुधार:** बुद्धिराम की पत्नी रूपा का जूठी पत्तलें चाटती काकी को देखकर पश्चाताप करना और फिर काकी को भोजन कराना, यह दिखाता है कि गलतियों का एहसास होने पर सुधार करना महत्वपूर्ण है।
- v). **नैतिक कर्तव्य:** प्रेमचंद जी इस कहानी के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि बुजुर्गों की सेवा करना केवल धर्म नहीं, बल्कि परमेश्वर की सेवा और पूजा के समान है; उनकी उपेक्षा करना महापाप है।

संक्षेप में, 'बूढ़ी काकी' हमें अपने परिवार के बुजुर्गों के प्रति अपने कर्तव्यों और मानवीय संवेदनाओं के महत्व को समझाती है।

सन्दर्भ सूची

1. प्रेमचंद. (2018). मानसरोवर: भाग-1. प्रकाशन संस्थान. (मूल कहानी 'बूढ़ी काकी' इसी संग्रह का हिस्सा है)।
2. गोपाल, म. (2004). प्रेमचंद: कलम का मजदूर. राजकमल प्रकाशन. (प्रेमचंद के जीवन और उनकी कहानियों के सामाजिक परिवेश को समझने के लिए)।
3. राय, अ. (1991). प्रेमचंद: एक विवेचन. वाणी प्रकाशन.
4. शर्मा, र. व. (2005). प्रेमचंद और उनका युग. राजकमल प्रकाशन. (प्रेमचंद की कहानियों में यथार्थवाद और सामाजिक चेतना के विश्लेषण हेतु)।
5. सिंह, न. (2012). प्रेमचंद और भारतीय समाज. राजपाल एंड संस.
6. कुमार, अ. (2015). प्रेमचंद की कहानियों में वृद्ध विमर्श: 'बूढ़ी काकी' के विशेष संदर्भ में. हिंदी अनुशीलन, 12(4), 45-52.
7. मिश्र, भ. (2019). प्रेमचंद की कहानियों में मानवीय संवेदना और करुणा. साहित्य सेतु, 7(2).
8. वर्मा, क. (2020). ग्रामीण जीवन और प्रेमचंद की कहानियाँ: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. जनकृति शोध पत्रिका।